विशारद द्वितीय वर्ष

गायन-वादन(स्वर वाद्य)

पूर्णांक:400, **न्यूनतम**:180

क्रियात्मक:250(**क्रिया**:200+**मंच प्रदर्शन**:50) **न्यूनतम**:128

शास्त्र:150 **न्यूनतम**:52

प्रथम प्रश्न पत्र

पूर्णांक:75, **न्यूनतम**:26

शास्त्र :-

१) पाठ्यक्रम के सभी रागों का विस्तृत विवेचन तथा सोदाहरण समानता-विभिन्नता का अध्ययन| स्वर समुदाय से राग को पहचानना तथा राग का विस्तार लिखना|

२) पाठ्यक्रम के सभी तालों का विस्तृत अध्ययन एवम् उन्हें विष्णु दिगंबर और भातखंडे पद्धति में लिखने की क्षमता| पाठ्यक्रम के तालों की दुगुन, तिगुन, चौगुन लयकारी लिखने की क्षमता|

३) निम्नलिखित विषयों का विस्तृत अध्ययन:-
मार्गीसंगीत, देशीसंगीत, स्वस्थान नियम, गंधर्वगान, कुतप वृंदगान|

४) शुद्ध, छायालग, संकीर्ण(रागवर्गीकरण) पद्धति|
परमेल प्रवेशक राग, दशविध राग वर्गीकरण पद्धति| (संगीत रत्नाकर के अनुसार)

५) वर्तमान काल के दो प्रसिद्ध गायकों की/वादकों की गायन, वादन शैलियों का परिचय|

६) मध्यकालीन एवम् आधुनिक स्वर स्थापना| वीणा के तार पर मध्यकालीक एवम् आधुनिक संगीतज्ञों के स्वर स्थानों की तुलना| तार की लंबाई की सहायता से आन्दोलन संख्या के आधार पर तार की लंबाई निकालना|

७) स्वरसप्तक का विकास (प्राचीन से आधुनिक काल तक)|

८) पाश्चात्य संगीत के निम्नांकित सिद्धांतों का सामान्य अध्ययन
Vibration, Frequency, Duration, Interval, Scale, Natural, Tempered Octave, Major tone, Minor tone, Semi tone.

९) संगीत के घरानों का संक्षिप्त इतिहास|

१०) सारणा चतुष्टी के भरत एवम् शार्ङ्गदेव द्वारा किये प्रतोगों का विवेचन|

११) कर्नाटक संगीत के स्वर, ताल, राग का सामान्यज्ञान तथा उ. भारतीय संगीत से तुलनात्मक अध्ययन|

द्वितीय प्रश्न पत्र

पूर्णांक:75 **न्यूनतम**:26

१) तानपूरे से निर्माण होनेवाले सहायक (सांध्वनिक) नादों का विश्लेषणात्मक विस्तृत अध्ययन|

२) कलावंत, पंडित, वाग्गेयकार, गीति, धृपद की बानियाँ एवम् गमक के प्रकार| (टिप्पणी लिखिए)|

३) संगीत विषयों पर निबंध:-

१) संगीत की वर्तमान समस्याएँ

२) रस और लय संबंध

३) महफिल का आयोजन

४) गुरुशिष्य परम्परा एवम् आधुनिक शिक्षा पद्धति|

४) संगीत के निम्नलिखित ग्रंथकारों का योगदान:-

(१) भरतमुनि (२) शाङ्र्गदेव (३) मतंग

(४) रामामात्य (५) अहोबल (६) आचार्य बृहस्पति

(७)ठाकुर जयदेव सिंग

निम्नलिखित विषयों का अध्ययन:-

१) रवींद्र संगीत का विस्तृत अध्ययन|

२) हवेली संगीत की परंपरा|

३) स्वरलिपि पद्धति का क्रमिक विकास और गुणदोष|

४) फिल्मी संगीत और संगीतकार, पार्श्वगायन, ध्वनिमुद्रण, काव्य और संगीत|

५) वृंदवादन रचना के नियम|

६) प्राचीन प्रबंध गायन के नियम और प्रबंधों के प्रकार|

७) पाश्चात्य नोटेशन पद्धति का साधारण ज्ञान|

क्रियात्मक:

* सभा में गाने/बजाने का अभ्यास तथा उसमें निपुणता प्राप्त करना इस वर्ष अपेक्षित है| रागों का सूक्ष्म परिचय, संगीत के विभिन्न विषयोंपर (क्रिया और शास्त्र) मौलिक विचार तथा उनको समझने और समझाने की योग्यता विद्यार्थी में होनी चाहिये| अपना वाद्य मिलाने की क्षमता अपेक्षित है| विद्यार्थी को संगीत सभा आयोजन तथा संचालन का भी प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये|

स्वरज्ञान:-

* गाई/बजाई हुई अथवा स्वरलिपिबद्ध किसी भी स्वररचना को आत्मसात् करने की योग्यता| सुनी हुई अथवा सीखी हुई रचना की स्वरलिपि मूल रूप में तथा गायकी अंग मे परिवर्तित करने की क्षमता|

रागज्ञान:-

* रागों की प्रकृति का सूक्ष्म अध्ययन, उनमें स्वतंत्रता से विचरण, नई स्वररचनाएँ बनाना, (सरगम, गत/गीत, तथा वृंदवादन) आविर्भाव, तिरोभाव, गमक, मींड, आंदोलन आदि का विस्तार से रसानुकूल समुचित प्रयोग करने का अभ्यास|
* निम्नलिखित सभी रागों में एक-एक विलंबित ख्याल तथा एक-एक द्रुत ख्याल/एक-एक मसीदखानी गत तथा एक-एक रजाखानी गत तैयार करनी है| विलंबित ख्याल विविध तालों में तैयार करना अनिवार्य है| हर एक राग २० से ३० मिनिट तक गाने-बजाने की क्षमता अपेक्षित है| वादन के लिए, विलंबित गत संपूर्ण विस्तार के साथ| मींड, घसीट, जमजमा, कृंतन व सूत इत्यादि(वाद्य विशेष के अनुसार), झाले के विभिन्न प्रकार एवं तैयारी|
* राग:- विस्तृत अध्ययन के लिए:-

१) मियाँ मल्हार, २) मुलतानी, ३) मारूबिहाग,

४) पूरिया, ५) शुद्धकल्याण, ६) दरबारी कानडा

साधारण ज्ञान के लिए:-

१) बिभास, २) ललित, ३) तोडी,

४) बसंत, ५) सोहनी, ६) हिंडोल,

७) मारवा

* साधारण ज्ञान के रागों में मध्यलय की बंदिशें/गतें १५ मिनिट तक आलाप तानों सहित/तोडों सहित गाने बजाने की क्षमता|
* इस वर्ष के किसी राग में एक ध्रुपद, एक धमार दुगुन, तिगुन, चौगुन के साथ, दो तराने, एक त्रिवट इस प्रकार ५ अन्य बंदिशें अलग अलग रागों में तैयार करनी है| वादन के लिए अपने वाद्य पर दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय बजाने का अभ्यास, वादन के विद्यार्थी इतनी ही रचनाएँ विभिन्न तालों में तैयार करें|
* उपशास्त्रीय संगीत में ठुमरी, दादरा या तत्सम अन्य कोई प्रकार(किसी प्रादेशिक भाषा में) तैयार करना है|

तालज्ञान:-

* अभी तक सीखे हुए सब तालों का संपूर्ण परिचय तथा उनको हाथ से ताली देकर बोलना तथा विभिन्न लयकारियों में बोलना| हाथ से ताली देकर बंदिश गाने की क्षमता|

अंकपत्रिका:-

सूचना: इस परीक्षा के लिये एक घंटे का समय निर्धारित किया गया है| इसके अतिरिक्त 25 मिनट का मंच प्रदर्शन अलग से श्रोताओं के सामने(संगीत सभा की तरह) होगा| मंच प्रदर्शन में विशारद द्वितीय वर्ष के <u>पाठ्यक्रम</u> के रागों में से किसी एक राग में विलंबित तथा मध्यलय की बंदिश संपूर्ण विस्तार के साथ प्रस्तुत करनी होगी| परीक्षार्थी चाहे तो इसके बाद(समय रहा तो) उपशास्त्रीय संगीत की रचना भी प्रस्तुत कर सकता है| गायन के परीक्षार्थी चाहे तो ताल वाद्य के साथ-साथ स्वर वाद्य की संगत भी(केवल मंच प्रदर्शन में) ले सकते हैं|

संपूर्ण विस्तार के साथ पूछी गई बंदिशों के लिए 7-7 मिनट तथा मध्यलय की बंदिशों के लिए 5-5 मिनट समय दे कर शेष समय में सभी कॉलम के प्रश्न पूछना है|

वाद्य मिलाना: तानपुरा तथा अपना वाद्य स्वर में मिलाने की क्षमता:15 अंक|

विलंबित बंदिश: इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 16 अंक | तथा अन्य दो रागों में अलग अलग तालों में ३-३ आलापों के साथ बंदिश:10-10 अंक| इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश:7-7 अंक|

कुल 50 अंक|

मध्यलय की बंदिशें: इस वर्ष के एक राग में संपूर्ण विस्तार के साथ बंदिश 10 अंक| तथा अन्य दो रागों में ३ आलाप तथा ५ तानों के साथ बंदिशें ६+६, इस वर्ष के अन्य एक राग में तथा पिछले एक राग में राग वाचक आलाप के साथ केवल बंदिश: 4+4 अंक|

कुल 30 अंक|

धृपद धमार: धृपद धमार या तत्सम गत की बंदिश:4 अंक| उस के स्थाई अंतरे की चौगुन: 5 अंक| तथा डेढगुन:6 अंक| नोम तोम के आलाप जोड, 5 अंक|

कुल 20 अंक|

अन्य गीत प्रकार: इस वर्ष के रागों मे तराना, त्रिवट, तथा झाला (इनमेंसे कोई एक प्रकार):7 अंक|

अलग अलग तालों में बंदिशें: तीन ताल को छोड कर अन्य ताल में एक बंदिश ३ आलाप तथा 5 तानों/तोडों के साथ:कुल 10 अंक|

राग स्वरूप: पूरिया-मारवा, बसंत-पूरिया धनाश्री, केदार-कामोद, मियामल्हार-बहार, इनमें से दो समूहों के राग स्वरूप को आलाप तथा तान अंगों के साथ स्पष्ट करना:18 अंक|

उपशास्त्रीय:इस वर्ष निर्धारित किये गये रागों में उपशास्त्रीय संगीत का कोई एक गीत प्रकार:10 अंक|

ताल ज्ञान:तबले पर बजते हुए एक विलंबित तथा एक मध्य लय का ठेका पहचानना, 5 अंक| सभी गीत प्रकारों की बंदिशें ठेका समझकर शुरू करने की क्षमता:8 अंक| किसी ताल का ठेका हाथ से ताली खाली दे कर तिगुन तथा डेढगुन में बोलना:3+4 अंक|

कुल 20 अंक|

नोटेशन: बंदिश की पंक्ति को सुनकर उस की स्वरलिपि लिखना तथा वह गा कर बताना और देशभक्तिपर गीत हार्मोनियमपर बजाना तथा गाना:20 अंक|

इस वर्ष के रागों में से एक राग और उपशास्त्रीय अथवा सुगम संगीत 20 से 30 मिनिट तक प्रस्तुति-मंच प्रदर्शन:50 अंक|

कुल क्रियात्मक:250 अंक|

लिखित:150 अंक|

सर्वयोग:400 अंक|